इस प्रकार तीन चरणों में आदर्श राज्य का निर्माण उन तीन वर्गों के क्रमशः विकास के साथ सम्पन्न होता है जो राज्य की तीन मूलभूत आवश्यकताओं - उत्पादन, रक्षा तथा शासन की पूर्ति अपने तीन गुणों क्षुधा (Appetite) साहस (Spirit) तथा विवेक (Reason) के आधार पर करते हैं।

जब हम प्लेटो के आदर्श राज्य के विकास चरण पर दृष्टि डालते हैं तो हमारे सामने आदर्श राज्य की कुछ विशेषतायें सामने आती हैं जो निम्न हैं—

(1) दार्शनिक शासक का शासन - प्लेटो के अनुसार राज्य तभी आदर्श रूप ग्रहण कर सकता जब राज्य का शासन निस्वार्थ, कर्तव्य-परायण दार्शनिक शासक द्वारा किया जाये। वह व्यक्ति के विवेक को व्यक्ति का सबसे महत्वपूर्ण तत्व समझता है और उसके अनुसार विवेक सम्पन्न व्यक्ति द्वारा ही शासन कार्य किया जाना चाहिए। अपने पुस्तक रिपब्लिक में उसने स्पष्ट किया है कि नगर राज्य में तब तक कष्टों का अंत नहीं होगा जब तक कि दार्शनिक राजा न होंगे और विश्व के नरेशों एवं युवराजों में दर्शन की भावना न होगी।

प्लेटो के अनुसार दार्शनिक शासक को विवेक का प्रेमी, सत्यानुगामी, न्यायप्रिय, निःस्वार्थी, आत्मसंयमी, शांत स्वभाव वाला एवं तीक्ष्ण स्मरण शक्ति वाला, भले गुणों से लैस होना चाहिए। प्लेटो आगे दार्शनिक राजा के लिए कुछ कर्तव्य भी निश्चित किया है जो निम्न हैं—

(क) राज्य में धन और निर्धनता का प्रवेश रोकना - प्लेटो के अनुसार ~~दार्शनिकों~~ दार्शनिक शासकों को यह देखना पड़ेगा कि राज्य में न धन अथवा निर्धनता का प्रवेश न हो क्योंकि धन से विलासिता, आलस्य और वैमनस्य पैदा होता है तथा निर्धनता से कमीनापन एवं कुकृत्य।

(ख) राज्य की सीमा में वृद्धि या कमी को रोकना - राज्य की एकता को कायम रखने के लिये उसे राज्य की सीमा को न तो अधिक बढ़ाना ही चाहिए और न ही अधिक कम करना चाहिए। ~~अ~~ राज्य का आकार इतना होना चाहिए कि वह आत्म निर्भर हो।

(ग) न्याय प्रशासन को कायम रखना।

(घ) शिक्षा पद्धति को बनाये रखना।

(ङ) कानून का निर्माण करना आदि

यह बात सही है कि आदर्श राज्य का कानून दार्शनिक राजाओं द्वारा निर्मित होगा तथा दार्शनिक राजा पर कानून का कोई बंधन नहीं होगा। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि दार्शनिक शासक निरंकुश होगा बल्कि वह मर्यादित होगा क्योंकि उसे कतिपय मर्यादाओं में कार्य करना होगा।

(2) न्याय की अवधारणा - प्लेटो के अनुसार आदर्श राज्य का आधार शिक्षा न्याय का सिद्धान्त है। चूँकि आदर्श राज्य में तीन वर्ग होते हैं और कार्य विभाजन एवं विशेषीकरण की धारणा के आधार पर इन तीनों वर्गों को अपना-अपना कार्य दूसरे के कार्य में हस्तक्षेप किये बिना करना होता है। इसलिए न्याय राज्य का वह गुण है जो राज्य के वर्गीकरण को तथा कार्य विभाजन को सुचारु रूप से कायम रखता है। इस गुण की उपस्थिति के कारण ही राज्य के विभिन्न वर्ग अपने-अपने कार्य क्षेत्रों तक अपनी कार्य-क्रियाओं को सीमित रखते हुये अपनी प्राकृतिक क्षमता एवं प्रशिक्षण के आधार पर निश्चित हुये कार्य को पूरी तन्मयता एवं लगन से सम्पन्न करते हैं एवं श्रेष्ठता को प्राप्त करते हैं। प्लेटो की दृष्टि में वह राज्य न्याय पर आधारित है जिसमें नागरिक अपने-अपने निर्धारित क्षेत्रों से अपने जिम्मे के कार्य सम्पन्न करते हैं।

(3) शिक्षा योजना - प्लेटो शिक्षा को आदर्श राज्य का आदर्श आधार स्तंभ माना है। उसने रिपब्लिक में शिक्षा को इतना अधिक महत्व दिया है कि रूसो उसे राजनीतिक विषयक ग्रंथ न मानकर शिक्षा विषयक ग्रंथ माना है। प्लेटो का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा व्यक्ति को एक विशेष कार्य का प्रशिक्षण देकर उसे वही कार्य सम्पन्न करते रहने की प्रेरणा देगी। राज्य द्वारा नियोजित शिक्षा प्रणाली को अपनाकर एक बहुत बड़ी सीमा तक व्यक्तियों के दृष्टिकोण को सही दिशा में बदला जा सकता है। आदर्श राज्य द्वारा प्रदत्त शिक्षा योजना की निम्न विशेषताओं पर प्लेटो जोर देता है -

(क) शिक्षा राज्य द्वारा दी जानी चाहिए।

(ख) स्त्री एवं पुरुषों के लिए समान शिक्षा प्रणाली

(ग) शिक्षा का उद्देश्य शरीर और मस्तिष्क दोनों का विकास करना है।

(घ) शिक्षा का प्रयोजन उत्तम नागरिक बनाना है।

12-4